Chapter 6: Chhaya Mat Chhoona - Girija Kumar Mathur

छाया मत छूना - गरिजा कुमार माथुर

1. Poet Introduction: Girija Kumar Mathur

- जन्म: 22 अगस्त 1919, अशोकनगर (मध्य प्रदेश)
- युग: प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के बीच का दौर
- शिक्षा: एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य), झांसी से
- पेशा: आकाशवाणी में उद्घोषक, बाद में निदेशक
- काव्य शैली: प्रतीकात्मक, गीतात्मक, संवेदनशील
- भाषा: खड़ी बोली हिंदी, सहज और प्रवाहमान
- विषय: प्रकृति, मानव संबंध, जीवन दर्शन, स्मृतियां
- प्रमुख रचनाएं: नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, मंजीर, भीतरी नदी
- सम्मान: साहित्य अकादमी पुरस्कार (1984), पद्म श्री
- मृत्यु: 10 जनवरी 1994, दिल्ली
- विशेषता: प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं का सूक्ष्म चित्रण

2. Poem Context and Philosophy

- शीर्षक का अर्थ: "छाया मत छूना" - अतीत की स्मृतियों को मत छेड़ो
- मूल भाव: बीते समय की यादों में उलझना दुखदायी है
- जीवन दर्शन: अतीत में जीने से वर्तमान बिगड़ता है
- मनोविज्ञान: स्मृतियां मधुर होती हैं लेकिन पीड़ादायक भी
- यथार्थवाद: जीवन की कठोर सच्चाई को स्वीकारना
- आगे बढ़ने का संदेश: अतीत को भूलकर वर्तमान में जीना चाहिए
- छाया का प्रतीक: अतीत की स्मृतियां, बीता हुआ सुखद समय
- कवि का अनुभव: व्यक्तिगत अनुभवों से उपजी कविता

3. Detailed Poem Analysis

मुख्य पंक्तियां और गहन व्याख्या:

"छाया मत छूना मन, होगा दुख दूना"

- भावार्थ: अतीत की यादों (छाया) को मत छेड़ो, वरना दुख दोगुना हो जाएगा
- प्रतीक: छाया = अतीत की स्मृतियां, बीता हुआ सुख
- संदेश: पुरानी यादों में उलझना दुखदायी है

"जीवन में सिर्फ एक बार ही आता है प्यार"
- भावार्थ: जीवन में प्रेम एक बार ही मिलता है, वह खो जाए तो फिर नहीं आता
- गहरा अर्थ: खोई हुई चीजें वापस नहीं आतीं
- दुख का स्रोत: जो चला गया उसकी याद ही पीड़ा देती है

"स्मृति सुख है या दुख है, यह छूने की बात है"
- भावार्थ: स्मृतियां मधुर लगती हैं लेकिन छूने पर (याद करने पर) दुख देती हैं
- मनोविज्ञान: यादें सुखद लगती हैं लेकिन वास्तव में पीड़ादायक होती हैं
- विरोधाभास: स्मृति में सुख और दुख दोनों छिपे हैं

"बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय"
- भावार्थ: जो बीत गया उसे भूल जाओ, आगे की सोचो (कबीर की उक्ति)
- संदेश: अतीत में न जीकर भविष्य की ओर देखो
- जीवन दर्शन: वर्तमान में जीना सीखो

"मृत्यु भी एक छाया है, सो उससे भी मत डरो"
- भावार्थ: मृत्यु भी एक छाया (आभास) है, उससे भयभीत होने की जरूरत नहीं
- गहरा दर्शन: जीवन-मृत्यु की वास्तविकता को स्वीकारना

4. Central Themes

- अतीत से मुक्ति: बीते समय की यादों से मुक्त होना जरूरी है
- वर्तमान में जीना: अभी के पल को जीना ही असली जीवन है
- स्मृतियों की पीड़ा: यादें सुखद लगती हैं लेकिन दुख देती हैं
- जीवन का यथार्थ: जो खो गया वह वापस नहीं आता
- आगे बढ़ने का साहस: अतीत को भूलकर भविष्य की ओर देखना
- मोह-माया से मुक्ति: बीती बातों में न उलझकर कर्म करना
- मृत्यु-बोध: जीवन और मृत्यु की स्वीकृति
- दार्शनिक चिंतन: जीवन के गहरे सत्य की खोज

5. Literary Devices

- प्रतीक योजना:

- छाया = अतीत की स्मृतियां, बीता हुआ सुख
- छूना = यादों को ताजा करना
- दुख दूना = पीड़ा का बढ़ना

- अलंकार:

- रूपक: स्मृति को छाया के रूप में
- विरोधाभास: स्मृति सुख भी, दुख भी
- अनुप्रास: "छाया मत छूना"

- भाषा: सरल खड़ी बोली, भावपूर्ण
- शैली: गीतात्मक, संवेदनशील, दार्शनिक
- छंद: मुक्त छंद, स्वच्छंद शैली
- बिंब: छाया का मार्मिक चित्र
- स्वर: करुण, दार्शनिक, उपदेशात्मक

6. Important Questions

प्रश्न 1: "छाया मत छूना" से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तर: "छाया" से कवि का तात्पर्य अतीत की स्मृतियों से है। कवि कहता है कि बीते समय की यादों को मत छेड़ो (याद मत करो), क्योंकि वे दुख को दोगुना कर देंगी। जो खो गया वह वापस नहीं आएगा, उसकी याद में उलझने से केवल पीड़ा ही मिलेगी।

प्रश्न 2: कविता का केंद्रीय संदेश क्या है?
उत्तर: कविता का केंद्रीय संदेश है कि अतीत की यादों में न उलझकर वर्तमान में जीना चाहिए। बीती बातों को भूलकर आगे बढ़ना ही जीवन का सही तरीका है। स्मृतियां भले ही मधुर लगें, लेकिन वे दुख का कारण बनती हैं।

प्रश्न 3: "स्मृति सुख है या दुख" - इस विरोधाभास को समझाइए।
उत्तर: स्मृतियां देखने में सुखद लगती हैं क्योंकि वे बीते हुए सुखद पलों की याद दिलाती हैं। लेकिन जब हम उन्हें याद करते हैं (छूते हैं) तो दुख होता है क्योंकि वे पल अब नहीं रहे। यही स्मृति का विरोधाभास है - सुख की याद खुद दुख बन जाती है।

प्रश्न 4: कवि ने मृत्यु को छाया क्यों कहा है?
उत्तर: कवि का कहना है कि मृत्यु भी एक आभास (छाया) है, वास्तविकता नहीं। जीवन-मृत्यु का चक्र प्राकृतिक है, इससे डरने की जरूरत नहीं। मृत्यु को स्वाभाविक मानकर जीवन जीना चाहिए।

प्रश्न 5: कविता की भाषा शैली की विशेषताएं बताइए।
उत्तर: (1) सरल खड़ी बोली, (2) प्रतीकात्मक शैली, (3) गीतात्मक प्रवाह, (4) दार्शनिक गहराई, (5) भावपूर्ण अभिव्यक्ति, (6) मुक्त छंद।